

## RAMKISHAN ADIG: A CONTEMPORARY ARTIST'S JOURNEY TO PUBLIC CONSCIOUSNESS (रामकिशन अडिग: एक समकालीन कलाकार की लोकचेतन यात्रा)

**Surendra <sup>a</sup>\*** Dr. Manoj Kumar Taylor <sup>b</sup>

<sup>a</sup> Research Scholar, Faculty of Fine Arts, Banasthali University, Tonk (Rajasthan)

<sup>b</sup> Director, Associate Professor, Department of Visual Arts, Banasthali University, Tonk

<sup>a</sup>Email: pm5106099@gmail.com

### Abstract

Ramkishan Adig is a contemporary artist from Rajasthan, recognized as a painter, sculptor, and art teacher. Born in 1968 in Narwasi village, Churu district, he earned a degree in sculpture from the Rajasthan School of Art, Jaipur, and has been working as an art teacher since 1997. His art is rooted in Rajasthani folk culture, and he uses a knife instead of a brush, which gives his works depth and distinctiveness. Adig has particularly focused on portraying the pain and struggles of women in his paintings, including series like "Widow," "Round the Sun," and "Working Women." Among his notable works are "Cheekh" (Scream) and a series of paintings on Mahatma Gandhi, where the sun repeatedly emerges as a symbol of energy and connection. His art often shows a tendency to "break the frame," and he completes his artworks in a single sitting.

He founded the art group "Toom 10" to provide a platform for emerging artists. Adig is also a skilled illustrator and writer, whose works have been published in various magazines, and he has authored books such as "Duniya Chitrakala Ki" (World of Painting) and "Duniya Sangeet Ki" (World of Music). He has received numerous national and regional awards, and his solo exhibitions have been held across India. Adig's art serves as a medium to highlight human sensibilities and relationships.

रामकिशन अडिग राजस्थान के एक समकालीन कलाकार हैं जो चित्रकार, मूर्तिकार और कला शिक्षक के रूप में जाने जाते हैं। उनका जन्म 1968 में चूरू जिले के नरवासी गाँव में हुआ था। उन्होंने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर से मूर्तिकला में डिग्री प्राप्त की और 1997 से कला शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। उनकी कला राजस्थानी लोक संस्कृति पर आधारित है और वे ब्रश के बजाय चाकू का प्रयोग करते हैं, जिससे उनकी कृतियों में गहराई और विशिष्टता आती है। अडिग ने विशेष रूप से चित्रों की पीड़ा और संघर्ष को अपने चित्रों का विषय बनाया है, जिनमें "विधवा", "रातंड द सन" और "कामकाजी महिलाएं" जैसी शृंखलाएँ शामिल हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में "चीख" और गांधीजी पर चित्र शृंखलाएँ हैं, जिनमें सूरज ऊर्जा और संबंध के प्रतीक के रूप में बार-बार उभरता है। उनकी कला में "फ्रेम तोड़ने" की प्रवृत्ति देखी जाती है और वे एक ही बैठक में अपनी कलाकृतियों को पूरा करते हैं। उन्होंने "Toom 10" नामक कला समूह की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य नवोदित कलाकारों को मंच प्रदान करना है। अडिग एक कुशल लेखक और रेखाचित्रकार भी हैं, जिनके चित्र विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं और उन्होंने "दुनिया चित्रकला की" तथा "दुनिया संगीत की" जैसी पुस्तकें भी लिखी हैं। उन्हें राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनकी एकल प्रदर्शनियाँ पूरे भारत में आयोजित की गई हैं। अडिग की कला मानवीय संवेदना और रिश्तों को उजागर करने का एक माध्यम है।

**Keywords:** Ramkishan Adig, Contemporary Artist, Folk Culture, Sculpture, Painting

रामकिशन अडिग, समकालीन कलाकार, लोक संस्कृति, मूर्तिकला, चित्रकला

\* Corresponding author.

राजस्थान के रेतीले धोरों से उठती धूल में एक कलाकार ने जन्म लिया, जिसने अपने रंगों और रेखाओं से लोक संस्कृति, पीड़ा, प्रेम और पहचान को न केवल संवारा, बल्कि उसे एक गहरे सामाजिक संवाद का माध्यम भी बनाया। यह कलाकार हैं - रामकिशन अडिग, जो एक साथ चित्रकार, मूर्तिकार और कला शिक्षक हैं, और जो समकालीन भारतीय कला के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।

## जन्म, शिक्षा और आरंभिक जीवन

रामकिशन अडिग का जन्म 1 नवम्बर 1968 को राजस्थान के चूरू ज़िले के एक छोटे से गाँव नरवासी में एक मध्यमवर्गीय जांगिड परिवार में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में ही पूरी करने के बाद उन्होंने कला की ओर झुकाव को जीवन पथ बनाया। बचपन से ही उन्हें मूर्ति कला और रिलीफ पेंटिंग में गहरी रुचि थी। जिसे उन्होंने अपने जुनून और साधना से विकसित किया। उन्होंने 1992 में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर से मूर्तिकला में डिग्री प्राप्त की और बाद में 2000 में चेन्नई से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भी किया। वर्ष 1997 से वे नवोदय विद्यालय समिति के अंतर्गत कला शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं।

## कला यात्रा और विशेषताएं

रामकिशन अडिग की कला का आधार राजस्थानी लोक संस्कृति, शिल्प और संगीत है। उन्होंने अपने आरंभिक चित्रों में रेगिस्तानी जीवन की कठिनाइयों, लोक प्रतीकों और स्त्री संवेदनाओं को बेहद संजीदगी से प्रस्तुत किया। उनकी शैली में एक अनोखा प्रयोगधर्मिता का भाव है – वे ब्रश की जगह चाकू का प्रयोग करते हैं, जिससे उनकी चित्रकला में तीव्रता, गहराई और एक विशिष्ट पहचान उभरती है। उनकी चित्र शैली में चटकीले और शांत रंगों का विरोधाभासी संतुलन, रेखाओं में विचारों की तरलता और सांकेतिकता का बौद्धिक प्रयोग प्रमुख है। विशेष रूप से लोक रूपांकनों का उपयोग बहुत ही आकर्षक है – साथ ही कठिन जीवन के बारीक पहलुओं को भी निर्बाध रूप से प्रस्तुत किया। उन्होंने विन्सेट वान गॉग और रामकिंकर बैज जैसे कलाकारों से प्रेरणा ली, लेकिन उनकी कला में एक स्वतंत्र लोकचेतना की आवाज स्पष्ट दिखाई देती है।

## स्त्री विषयक चित्रण

रामकिशन अडिग ने विशेष रूप से स्त्रियों की पीड़ा, संघर्ष और चेतना को अपने चित्रों का विषय बनाया है। उन्होंने विधवाओं, ग्रामीण उपेक्षित औरतों, तथा कामकाजी महिलाओं पर आधारित शृंखलाएँ बनाईं।

- 1999: "विधवा" विषय पर सुदर्शन कला दीर्घा, बीकानेर में प्रदर्शनी
- 2007: "रातंड द सन" – महिलाओं पर आधारित चित्र, जेकेके, जयपुर
- 2009: "कामकाजी महिलाएं" – चित्र प्रदर्शनी
- "मोहतर्पा" शृंखला – 20 चित्रों की प्रभावशाली कड़ी

## प्रमुख कलाकृतियाँ और तकनीक

रामकिशन अडिग की प्रमुख कृतियों में "चीरव" (तेलरंग में), गांधीजी पर चित्र शृंखला, सौरमंडल विषयक चित्र तथा कवि नंदकिशोर आचार्य की कविताओं "तंग गलियां", "बाजार", "खेल रहे चारमर" का चित्ररूपांतरण शामिल हैं। उनकी कला में फ्रेम तोड़ने की प्रवृत्ति देखी जाती है, जहाँ कैनवास का प्रत्येक कोना संवाद का माध्यम बनता है। उनकी पेंटिंग में सूरज एक प्रतीक के रूप में बारंबार उभरता है – जो ऊर्जा, संबंध और चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। यह कला केवल दृश्य नहीं, बल्कि संवेदना और स्मृति की पुनर्रचना है।

## चित्र सूजन

आपकी कला में रेखाओं और रंगों के मध्य गहरा अंतर्संबंध दिखाई देता है। आपकी कृतियाँ जीवन के विविध पहलुओं को संवेदनशीलता से अभिव्यक्त करती हैं। रंगों और रेखाओं में विचारों का सूजन है, जो अनुभवों की परतों को खोलते हैं। आपकी पहचान चाकू के स्ट्रोक्स से बनी है – आप ब्रश का प्रयोग नहीं करते, बल्कि चाकू से रंगों को जैसे कैनवास पर खुरचते हैं। यह तकनीक न केवल अद्वितीय है, बल्कि उसमें एक विशेष ऊर्जा और तीव्रता भी दिखाई देती है। आप अपने चित्रों में शांत और चटकीले रंगों का ऐसा विरोधाभास रखते हैं, जिससे रंग प्रतीकात्मक रूप धारण कर लेते हैं। आपके द्वारा चुने गए रंग माने अंतरमन की अनुभूतियों और भावनाओं के उतार-चढ़ाव को प्रतिबिंबित करते हैं। आपके प्रतीकात्मक और अमूर्त चित्रों में संकेत इन्हें सशक्त होते हैं कि विषय बिना कहे भी पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। आप एक ही बैठक में पूरी कलाकृति को पूर्ण करते हैं, और उस प्रक्रिया में पूरी तरह दूब जाते हैं। भूमंडलीकरण के प्रभावों पर आधारित आपकी चित्र शृंखला भी उल्लेखनीय है, जो समाज में बढ़ती खाइयों और उनके मनोवैज्ञानिक प्रभावों को उजागर करती है। आपके चित्रों की भाषा में संवाद है। विन्सेट वान गॉग से प्रभावित होकर आपने रंगों को एक विशिष्ट गति और भावना प्रदान की है। रंग एक-दूसरे से मिले बिना भी अपनी स्वतंत्र ऊर्जा में गतिशील रहते हैं। आपकी रचनात्मकता अब केवल रूपों के निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि आप नए संप्रेषण के माध्यम तलाश रहे हैं। जैसे सूर्य पूरे दिन संसार को रोशनी देता है, वैसे ही आपकी हर पेंटिंग में 'सूर्य' किसी न किसी रूप में उपस्थित रहता है – जो विषय की व्यापकता को गहराई से अभिव्यक्त करता है। यद्यपि कई बार विषय स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं होता, फिर भी आपकी चित्रकला दर्शकों को उन भूले-बिसरे रिश्तों की याद दिलाती है, जिनके पुनर्निर्माण की आज सरबत ज़रूरत है। यह एक गहरी और ज़रूरी मांग के रूप में चित्रों से झलकती है।

आपके प्रारंभिक कार्यों में लोक-प्रेरणा की झलक साफ दिखाई देती थी। हाथों की मुद्राएँ, गतिविधियाँ और "फ्रेम तोड़ने" की प्रवृत्ति – यानी चित्रों का विषय फ्रेम से बाहर आने की कोशिश करता था। अब आपका दृष्टिकोण और परिपक्व हो गया है; समय और स्थान के एक 'फूलदार धागे' ने उस फ्रेम को नया स्वरूप दे दिया है। आपका स्पेस का प्रयोग अभी भी संभावनाओं से भरा हुआ है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि आप पूरे कैनवास को छवियों से भर देना चाहते हैं, जो यह दर्शाता है कि आपके पास कहने को बहुत कुछ है – और अब तक उसका केवल एक हिस्सा ही अभिव्यक्त हुआ है। यह सूजनात्मक बेचैनी आपके कलात्मक क्षितिज को और भी विस्तृत बनाती है, जो प्रशंसनीय है। काले और चटकीले रंगों के प्रति आपका लगाव आपके कार्यों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। आपने सफेद और पीले जैसे हल्के रंगों के साथ भी अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग किए हैं। आपके रंगों की छाया

और गहराई, चाकू की अद्भुत तकनीक के माध्यम से, चित्रों को विशिष्ट रूप प्रदान करती है। आपकी पेंटिंग्स में 'सूर्य' न केवल एक दृश्य तत्व है, बल्कि ऊर्जा, प्रेम और संबंधों की पुनर्जन्म का प्रतीक है। आज के तीव्र संचार युग में, जब मानवीय संबंध अपने अर्थ खोते जा रहे हैं, आपकी चित्रकला उन्हें पुनः खोजने और जोड़ने का माध्यम बनती है। आपकी पेंटिंग्स उन हल्के पक्षों को सामने लाने की कोशिश करती हैं जो अक्सर मानवीय जीवन में अनदेखे रह जाते हैं।

मूर्ति शिल्प संख्या 1 यह काष्ठ मूर्ति, समकालीन कलाकार रामकिशन अडिग द्वारा निर्मित है। इसका शीर्षक "होलो द्रायड" है, जो तीन प्रतीकात्मक रूपों – बैल, पक्षी और खोखले मानव शरीर – को एक साथ समाहित करता है। इस रचना में कलाकार ने लकड़ी की प्राकृतिक बनावट और रंगों का अत्यंत संवेदनशीलता से प्रयोग करते हुए, जीवन के गहरे दर्शनों को मूर्ति रूप दिया है। बैल इस त्रयी में स्थायित्व, परिश्रम और भारतीय ग्रामीण संस्कृति का प्रतीक है। यह आकृति बिना विवरण के भी शक्ति और संतुलन को दर्शाती है। वहीं, पक्षी आकृति (जो ऊपरी हिस्से में रूपायित है) स्वतंत्रता, चेतना और आत्मा की उड़ान का प्रतिनिधित्व करती है। तीसरी आकृति है एक लेटा हुआ मानव शरीर, जो पूर्णतः खोखला है। यह खोखलापन जीवन की आंतरिक शून्यता, आत्मिक रिक्तता और अस्थिरता को उजागर करता है। यह मानव आकृति न तो सोई हुई है और न ही पूरी तरह जागृत, बल्कि एक रहस्यमयी स्थिति में है - मानो किसी गूँड प्रश्न के उत्तर की खोज में हो। यह मूर्तिकला आकार में सरल परंतु अर्थ में गहरी है। "होलो द्रायड" में रामकिशन अडिग ने प्रतीकों के माध्यम से एक अद्वितीय संवाद रचा है – प्रकृति, प्राणी और चेतना के बीच। यह न केवल एक सौंदर्यपरक कृति है, बल्कि एक दार्शनिक विचार भी, जो दर्शक को आत्मनिरीक्षण हेतु आमंत्रित करता है।

चित्र संख्या 2 यह चित्र समकालीन कलाकार रामकिशन अडिग द्वारा रचित एक कलाकृति है, जिसका आकार 24x36 इंच है। इस चित्र को एक्रेलिक रंगों द्वारा नाइफ स्ट्रोक्स तकनीक में तैयार किया गया है, जो इसकी बनावट और प्रभाव में एक विशिष्ट गहराई और ऊर्जा प्रदान करता है। इस चित्र की मुख्य आकृति एक चेहरा है, जो एक आध्यात्मिक और अमूर्त भावभूमि में दर्शाया गया है। विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करने वाला भाग आंख है, जो धीरे-धीरे एक अर्धचंद्राकार चंद्रमा में रूपांतरित होती प्रतीत होती है। यह परिवर्तन न केवल एक सौंदर्यात्मक प्रतीक है, बल्कि यह अंतरात्मा की दृष्टि, चंद्रमा की शांति, और आत्मचिंतन के गूँड अर्थ को भी दर्शाता है। चित्र की पृष्ठभूमि में गहरा काला और नीला रंग एक रहस्यमयी आभा उत्पन्न करता है, जो रात्रि, शून्यता और ब्रह्मांड की अनंतता का प्रतीक है। वहीं, चंद्रमा का रूपाकार आंख में विलीन होकर मानव चेतना और प्रकृति के बीच के अद्वितीय संबंध को उद्घाटित करता है। नाइफ स्ट्रोक्स द्वारा बनाई गई रेखाएं और बनावट इस रहस्यात्मकता को और अधिक सजीव बनाती हैं। रामकिशन अडिग की यह कृति एक और जहां आधुनिक कला की संवेदनशीलता को दर्शाती है, वहीं दूसरी ओर यह पारंपरिक प्रतीकों को नए अर्थों और रूपों में सामने लाती है। यह चित्र न केवल देखने योग्य है, बल्कि चिंतन और अनुमूलित के स्तर पर भी गहराई से जोड़ता है।

### मूर्तिकला में योगदान

मूलतः मूर्तिकार रहे अडिग ने सीमेंट, मेटल, वुड और कंक्रीट में अनेक सार्वजनिक मूर्तियाँ तैयार की हैं। उनके मूर्तिकला कार्यों में जॉन मिलटन, आइज़क न्यूटन, चंद्र सिंह बिरकाली, आचार्य तुलसी (पीतल में) तथा वैज्ञानिकों की 13 मूर्तियाँ शामिल हैं, जो उन्होंने हनुमानगढ़, बीकानेर और अन्य स्थानों पर स्थापित कीं।

### "Toom 10" कला समूह की स्थापना

वर्ष 1992 में उन्होंने "Toom 10" नामक कला समूह की स्थापना की, जिसका उद्देश्य नवोदित कलाकारों को मंच देना और सामूहिक कला गतिविधियाँ करना था। इस समूह की प्रथम प्रदर्शनी राजस्थान ललित कला अकादमी में हुई थी, और यह समूह आज भी सक्रिय है।

### साहित्यिक और प्रकाशन कार्य

एक संवेदनशील कलाकार होने के साथ-साथ रामकिशन अडिग एक कुशल रेखाचित्रकार और लेखक भी हैं। उनके चित्र नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, राजस्थान पत्रिका, वर्तमान साहित्य, शिक्षा विमर्श आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। वे साहित्य अकादमी की पत्रिका "मधुमति" के उप-संपादक भी रहे हैं और उन्होंने हजारों पुस्तकों के आवरण चित्र तैयार किए हैं। 'दुनिया चित्रकला की' तथा 'दुनिया संगीत की' पुस्तकों भी प्रकाशित हुई हैं। कुछ पुस्तकों का संपादन भी किया है।

### प्रमुख प्रदर्शनियाँ

रामकिशन अडिग ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक समूह और एकल प्रदर्शनियों में भाग लिया है। जिनमें प्रमुख हैं:

- ललित कला अकादमी, नई दिल्ली (1992)
- SAHMAT (1990), AIFACS (1991)
- वर्णिका, रूपम, तूलिका (राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट के पूर्व छात्रों द्वारा)
- 2012: अदम गौड़वी और डॉ. सत्यनारायण की कविताओं पर आधारित प्रदर्शनियाँ

### पुरस्कार और सम्मान

उनकी कला यात्रा को अनेक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सम्मानों से नवाज़ा गया है:

- 1990-91: सर्वश्रेष्ठ छात्र पुरस्कार – राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट
- 1992: छात्र पुरस्कार – राजस्थान ललित कला अकादमी

- 1996: यूनेस्को – एशिया प्रशांत सांस्कृतिक केंद्र द्वारा सम्मानित
- 2003-2004: गुरु श्रेष्ठ और गुरु परम – एनवीएस, नई दिल्ली
- 2006: राजस्थान पत्रिका सम्मान
- 2012-2013-2018: जिला प्रशासन, निर्वाचन आयोग, दैनिक भास्कर द्वारा सम्मानित

### एकल प्रदर्शनी

अडिग ने कला जीवन में अनेक स्थानों पर एकल प्रदर्शनियाँ भी आयोजित की हैं। जिसमें 1990 मोहता लोकगीत अनुसंधान संस्थान, 1997 सुदर्शन कला दीर्घा, बीकानेर, 2007 और 2009 जवहार कला केंद्र जयपुर, 2010 सूचना केंद्र चुरु के साथ-साथ पूरे भारत में पोस्टरों के कई एकल प्रदर्शन किए। रामकिशन अडिग का कला संसार केवल रंग और आकृति तक सीमित नहीं है, वह समाज, लोक, मनुष्य और संबंधों की गहराई से जुड़ा एक चेतन संसार है। उनके चित्र और मूर्तियाँ दृश्य संवाद के साथ-साथ मानवीय संवेदना का आइना भी हैं। वे आज भी सतत रचना में रहे हैं – मानो हर दिन सूर्य की तरह अपनी रचनाशीलता से जीवन को आलोकित कर रहे हैं।

### संदर्भ:

1. व्यक्तिगत साक्षात्कार
2. “आधुनिक भारतीय कला एवं कलाकार”, लेखक: डॉ. राजेश कुमार व्यास (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, संशोधित संस्करण 2020)